हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2008

एम.एच.डी.-4 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं ***तीन*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *12×3=36*

(क) सूखी रोटियाँ बचा कर रखनी पड़ती हैं । जिन्हें कुत्तों को देते हुए संकोच होता था, उन्हीं कुत्सित अन्नों का संचय ! अक्षय निधि के समान उन पर पहरा देता हूँ । मैं रोऊँगा नहीं; परन्तु यह रक्षा क्या केवल जीवन का बोझ वहन करने के लिए है ? नहीं, पर्ण ! रोना मत । एक बूँद भी आँसू आँखों में न दिखाई पड़े । तुम जीते रहो तुम्हारा उद्देश्य सफल होगा । भगवान् यदि होंगे तो कहेंगे मेरी सृष्टि में एक सच्चा हृदय था । संतोष कर उछलते हुए हृदय ! संतोष कर, तू रोटियों के लिए नहीं जीता; तू उसकी भूल दिखाता है जिसने

तुझे उत्पन्न किया है । परन्तु जिस काम को कभी नहीं किया, उसे करते नहीं बनता, स्वाँग भरते नहीं बनता; देश के बहुत से दुर्दशा-ग्रस्त वीर-हृदयों की सेवा के लिए करना पड़ेगा । मैं क्षत्रिय हूँ, मेरा यह पाप ही आपद्‌धर्म होगा ।

(ख) “यूँ तो कोई भी एक आदमी की तरह चलता-फिरता बात करता है । वह आदमी ही होता है ... पर असल में आदमी होने के लिए क्या यह ज़रूरी नहीं कि उसमें अपना एक माद्दा, अपनी शख़्सियत हो ? पुरुष चार : महेंद्र को सामने रख कर तुम इसलिए कह रही हो कि .... । स्त्री : इसलिए कह रही हूँ कि जब से मैंने उसे जाना है, मैंने हमेशा हर चीज़ के लिए उसे किसी-न-किसी का सहारा ढूँढ़ते पाया है ख़ासतौर पर आपका । यह करना चाहिए या नहीं — जुनेजा से पूछ लूँ । वहाँ जाना चाहिए या नहीं जुनेजा से राय ले लूँ । कोई छोटी से छोटी चीज़ खरीदनी है जुनेजा की पसंद से । कोई बड़े-से-बड़ा ख़तरा उठाना है — तो भी जुनेजा की सलाह से ।

(ग) पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी, शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त, सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी । जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में, सदा-सदा के लिए होगा विलीन वह । गेहूँ की बालों में सर्प फुफकारेंगे । नदियों में बह-बहकर आएगी पिछली आग ।

(घ) इन दो अक्षरों में न जाने कितनी शक्ति है कि इनकी लपेट से बचना यदि निरा असंभव न हो तो भी निरा कठिन तो अवश्य है । जबकि भगवान् रामचन्द्र ने मारीच राक्षस को सुवर्ण-मृग समझ लिया था तो हमारी आपकी क्या सामर्थ्य है जो धोखा न खाएँ ? वरं च ऐसी-ऐसी कथाओं से विदित होता है कि स्वयं ईश्वर भी केवल निराकार निर्विकार ही रहने की दशा में पृथक् रहता है सो भी एक रीति से नहीं रहता, क्योंकि उसके मुख्य कामों में से एक काम सृष्टि का उत्पादन करना है, उसके लिए उसे अपनी माया का आश्रय लेना पड़ता है । और माया, भ्रम, छल आदि धोखे के ही पर्याय हैं ।

(ङ) मैंने उनसे अधिक सहृदय व्यक्ति कम देखे हैं । यदि यह वृद्ध यहाँ न होकर हमारे बीच में होता, तो कैसा होता, यह प्रश्न भी मेरे मन में अनेक बार उठ चुका है, पर जीवन के अध्ययन ने मुझे बता दिया है कि इन दोनों समाजों का अंतर मिटा सकना सहज नहीं । उनका बाह्य जीवन दीन है और हमारा अंतर्जीवन रिक्त । उस समाज में विकृतियाँ व्यक्तिगत हैं, पर सद्भाव सामूहिक रहते हैं । इसके विपरीत हमारी दुर्बलताएँ समष्टिगत हैं, पर शक्ति वैयक्तिक मिलेगी ।

(च) गर्व से मेरी छाती फूल उठी । कौन कहता है कि बंगाल मर गया है ? जहाँ भूख और बीमारियों से लड़ कर भी मनुष्यों के बालकों में क्रांति को चिरजीवी रखने का अपराजेय साहस है, वह राष्ट्र कभी भी नहीं मर सकेगा । हड्डी-हड्डी से लड़ने वाले ये योद्धा जीवन की महान् शक्ति को अभी तक अपने में जीवित रख सके

हैं । संसार कहता है, स्टालिनग्राड में लोग खण्डहरों में से लड़े थे और उन्होंने दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिए । उन्होंने बर्बरता की धारा को रोक कर रूस को गुलाम होने से बचा दिया । किन्तु मैं पूछता हूँ क्या शिद्धिरगंज दूसरा स्टालिनग्राड नहीं ? मनुष्य भूख से तड़प-तड़प कर यहाँ जान दे चुके हैं, वे भीषण रोगों के शिकार हो चुके हैं, उनके घर खण्डहर हो गए हैं, क़ब्रों से जमीन ढक गई है, नदियों में लाशों की सड़ाँध एक दिन दूर-दूर तक फैल गई थी, किन्तु मनुष्य का साहस जीवित है ।

2. नाटक लेखन को प्रोत्साहित करने के पीछे भारतेंदु का क्या उद्देश्य था ? 'अंधेर नगरी' द्वारा इस उद्देश्य को किस प्रकार पूरा किया गया है ?

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक के माध्यम से प्रसाद ने अपने समय किस ढंग से और किस रूप में चित्रित किया है ?

4. काव्य नाटक के रूप में 'अंधा युग' का मूल्यांकन करते हुए हिन्दी रंगमंच को इसके योगदान पर प्रकाश डालिए । *16*

5. मोहन राकेश के विभिन्न नाटकों के आधार पर हिन्दी नाट्य परंपरा में उनके योगदान का मूल्यांकन कीजिए । *16*

6. 'लोभ और प्रीति' निबन्ध के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धों की विशेषताएँ बताइए । *16*

7. 'संस्कृति और जातीयता' निबन्ध के आधार पर रामविलास शर्मा की निबन्ध-शैली का विवेचन कीजिए । *16*

8. अज्ञेय ने 'अवसाद' को निराला के भावबोध का मुख्य आधार माना है, फिर भी उन्हें 'वसंत का अग्रदूत' कहा है । इस अंतर्विरोध के औचित्य पर प्रकाश डालिए । *16*

9. साहित्यिक विधा के रूप में साक्षात्कार के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए 'ऑक्टेवियो पॉज' की समीक्षा कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : *8×2=16*

(क) 'कलम का सिपाही'

(ख) नुक्कड़ नाटक

(ग) आत्मकथा में व्यक्त बच्चन का व्यक्तित्व

(घ) राहुल जी का यात्रा-वृत्तांत